भारतीय डायस्पोरा में 'कबीर पंथ'

मुन्नालाल गुप्ता

सारांशः

भारत में कबीर को मानने वाले अधिकांश श्रमिक, दस्तकार, किसान वर्ग के लोग थे। औपनिवेशिक काल में अंग्रजों द्वारा भारत में आर्थिक, प्रशासनिक और सैनिक क्षेत्रों में व्यापक परिवर्तनों के कारण भारतीय श्रमिकों, किसानों, हस्तशिल्पियों की स्थिति बहुत खराब होती चली गयी। इसके कारण रोज़ी-रोटी की खोज में श्रमिकों को औपनिवेशिक शासन के चंगुल में फंसकर कई देशों में प्रवासित होना पड़ा। ये प्रवासित भारतीय श्रमिक अपने साथ अपनी 'सांस्कृतिक गठरी' में अपना धर्म, विश्वास पद्धति और पंथ को भी ले गए। इन धार्मिक पंचों में कबीर पंथी भी थे। दूर और अनजान देश में प्रारंभिक संघर्ष के समय में कबीर की शिक्षा, वाणी, बीजक इनका सहारा बना। धीरे-धीरे अर्थिक समृद्धि के साथ ये कबीर पंथी भारतीय डायस्पोरा ने अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ाया और अपनी अलग पहचान के लिए कई देशों में संगठन, मठ, आश्रम आदि बनाए। प्रस्तुत आलेख में विदेशों में भारतीय डायस्पोरा के बीच प्रचलित कबीर पंथ की विकास यात्रा के साथ-साथ उनकी सामाजिक-सांस्कृतिक गतिविधियों के बारे में एक सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है। इस आलेख को तैयार करने के लिए प्राथमिक स्रोत के रूप में विदेशों में भारतीय डायस्पोरा के बीच प्रचलित कबीर पंथी संस्थाओं, आश्रमों, मठों आदि की गतिविधियों को आधार बनाया गया है और द्वितीयक स्रोत के लिए कबीर और कबीर पंथ से संबंधित पुस्तकों, शोधलेखों आदि का उपयोग किया गया है।

मुख्य शब्दः कबीर पंथ, भारतीय डायस्पोरा, चौका, सांस्कृतिक गठरी, पहचान, कबीर चौरा, झंडी, बंदगी, नृजातीय चिह्न।

समुद्रपारीय देशों में भारतीयों के प्रवासन और उन देशों में अपनी देश की मिट्टी, संस्कृति की यादों के साथ बस जाने की परिघटना ने भारतीय डायस्पोरा समुदाय को निर्मित किया है। यद्यपि यह प्रवासन सिंधु सभ्यता के समय से जारी है परंतु औपनिवेशिक कालीन

परिस्थितियों ने इसे और अधिक त्वरित कर दिया। औपनिवेशिक काल में भारतीयों का विदेश प्रवासन सिद्ध दोष, गिरमिटिया श्रमिकों, कंगनी और मेस्त्री, स्वतंत्र व्यापारी आदि के रूप में मॉरीशस (1834), त्रिनिदाद और टोबागो (1845), सूरीनाम (1873), दक्षिण अफ्रीका (1860), फ़ीजी (1879), गयाना (1838), न्यूजीलैंड (1840), कनाडा (1904) हुआ। (कुमार, 2017, पृ. 24) भारतीय प्रवासन के क्षेत्रीय, धार्मिक एवं कालगत विविधता ने भारतीय डायस्पोरा में विविधतापूर्ण और गतिशील धार्मिक परिस्थिति का निर्माण किया है। भारतीयों के बीच प्रचलित धार्मिक विश्वासों और धार्मिक पंथों ने विदेशी भूमि की बहुधार्मिक, बहुसांस्कृतिक और बहुनृजातीय परिस्थितियों के बीच भारतवंशियों को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया। परदेश में पहचान की उत्कंठा ने भी प्रवासी भारतीयों को विदेशी भूमि गंतव्य (होस्ट लैंड) पर भी स्वभूमि (होम लैंड) से संबंधित भारतीयता के नृजातीय चिन्हों (मार्कर) (पर्म, पंथ, भाषा, क्षेत्रीयता, स्थानीयता, जाति, खानपान, पहनावा, सामूहिक स्मृति आदि) से जोड़े रखकर उन्हें भारतवंशी बनाये रखा है। (भाटिया, 2001) परिणामस्वरूप, भारतवंशी त्रिनिदाद, मॉरीशस, फ़ीजी, गयाना, सूरीनाम आदि देश में आर्थिक और राजनीति उपलब्धि के शिखर तक पहुँच पाने में कामयाब हुए। कई विद्वानों का मानना है कि धर्म एवं पंथ डायस्पोरा का निर्माण नहीं करता बल्कि यह डायस्पोरा के आपसी जुड़ाव के लिए अतिरिक्त सामग्री प्रदान करता है। (पारेख, 1993, कोहेन, 1997:189, वर्टोवेक, 2000:10-15)

जब औपनिवेशिक काल में भारतीय श्रमिकों को विभिन्न देशों में खेती करने एवं अन्य संरचनात्मक कार्यों के लिए लाया गया तब ये भारतीय श्रमिक अपनी 'स्वभूमि' से बिछुड़ते हुए 'गंतव्य भूमि' में अपने साथ अपने देश की 'सांस्कृतिक गठरी' को ले आए। इस गठरी में भौतिक रूप में धर्म ग्रंथ, लोटा, हनुमान चालीसा, कबीर वाणी, बीजक, 'रविदास की अमृत बानी', आदि ग्रंथ और स्मृतियाँ, यादों में अपने धर्म, पंथ पूजा पद्धति, गाँव पंचायत और समाज के रीति-रिवाज, लोकगीत, लोक कहानी, बिरहा, खानपान आदि को साथ लाए। इस प्रकार भारतीयों के साथ-साथ उनकी संस्कृति भी गतिमान रही। इसी गतिमान सांस्कृतिक गठरी को जेम्स क्लिफोर्ड (1992) ने ट्रेवलिंग कल्चर कहा। इसीलिए, उन्होंने समुद्रपारीय देशों में प्रवासित होकर आने के बाद अपनी स्वभूमि की बादों/ स्मृतियों को गंतव्य देशों के पेड़ों, नदियों, सरोवरों और वनों, सड़कों, चौक-चौराहो आदि में अपनी परंपरागत देवी-देवताओं को पुनरुत्पादित और पुनस्थापित करना प्रारंभ किया। इसीलिए, कुछ ही वर्षों के बाद हर गाँव और शहर में छोटे-बड़े मंदिर, धार्मिक स्थल और धार्मिक-सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ साथ डीह-स्थान, काली माई, कबीर स्थान आदि बन गया था। यही नहीं, उन्होंने अपने घर के द्वार पर, छत पर धार्मिक झंडी (आर्य समाजी, सनातनी या कबीर पंथी), आँगन में किसी पेड़ के नीचे 'पितरों का चौतरा' और झोपडी के एक कोने में 'देवकुर' (देवस्थान) की स्थापना कर डाली। (रामशरण, 1990:67) आज लगभग वे सारे

भारतीय धार्मिक एवं लोकप्रिय संप्रदाय, पंथ भारतीय डायस्पोरा के बीच उपस्थित हैं जो भारतीय भूमि पर थे।

भारत में कबीर और कबीरपंथ: कबीर पंथ (कबीर का स्कूल) में वे सभी शामिल हैं जो कबीर और उनकी शिक्षाओं का सम्मान करते हैं, चाहे वे एक औपचारिक संगठन से संबंधित हो या नहीं। सगुरु प्राकट्य धाम, लहरतारा, बनारस के अनुसार वैश्विक स्तर पर कबीर पंथ (कबीर पंथ के अनुयायी) अनुयायियों की संख्या 25 मिलियन और 300 कबीर आश्रम हैं। महापात्र (2003) के अनुसार भारत में कबीर पंथियों की संख्या 9.6 मिलियन है।

कबीर एक संत कवि थे जो पंद्रहवीं शताब्दी के दौरान उत्तर भारत में रहते थे। कबीर पंथी 1398 ईस्वी को कबीर का जन्म वर्ष मानते हैं। ऐसा माना जाता है कि कबीर एक ब्राह्मण विधवा से पैदा हुए थे जिसे त्याग दिया था। बुनकर जाति के एक गरीब मुस्लिम जोड़े ने उन्हें वाराणसी के पास एक तालाब में कमल के फूल पर आराम करते हुए पाया और उनका पालन-पोषण करने के लिए उन्हें घर ले गए। यह भी माना जाता है कि उनका जन्म मई के अंत या जून की शुरुआत में पूर्णिमा की रात को हुआ था, और इसलिए उनके जन्म का सालगिरह (जयंती, जैसा कि इसे कैरिबियन में कहा जाता है) हमेशा इस समय मनाया जाता है। उनके गुरु (शिक्षक) संत परंपरा के संस्थापक रामानंद थे। संत परंपरा में वैष्णव तत्वों का मिश्रण था। सूफी इस्लाम के साथ हिंदू धर्म एक विश्वास-आधारित परंपरा का निर्माण करते हैं जो शुद्ध प्रेम और ईश्वर के प्रति व्यक्तिगत भक्ति पर केंद्रित है (आमतौर पर त्रिनिदाद में अंग्रेजी शब्द "ईश्वर" कबीर पंथियों द्वारा उपयोग किया जाता है। वे अन्य परंपराओं के शब्दों का भी उपयोग करते हैं, जिसमें शामिल हैं राम, अल्लाह, सत-गुरु, सब-बिधि, गुरु ब्रह्मा और मुधमंगल आगर) इस प्रकार पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी के दौरान फली-फूली संत परंपरा एक बड़े धार्मिक सुधार का हिस्सा बनी जिसे भक्ति आंदोलन के रूप में जाना जाता था। अन्य प्रसिद्ध धार्मिक नेता जो इस अवधि के दौरान सक्रिय थे, उनमें सिख परंपरा के संस्थापक गुरु नानक और हरे कृष्ण आंदोलन के संस्थापक चैतन्य आदि शामिल हैं।

संत कवियों ने जाति-व्यवस्था पर प्रहार किया था। खासकर समाज के श्रमिक वर्ग के लोग निर्गुण भक्ति को मानने वाले संत रविदास, कबीर तथा शिव नारायण के अनुयायी थे। उन्होंने सिखाया कि मंदिर के अनुष्ठान, मूर्तियों (मूर्तियों या चिह्नों) की पूजा, भिक्षा, तीर्थयात्रा (चाहे मक्का या वाराणसी), उपवास और तपस्वी प्रथाएँ, सब बेकार गतिविधियाँ हैं। बल्कि, प्रेम की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति और भक्त के आध्यात्मिक विकास में भगवान की भक्ति ही सब कुछ है। चूँकि हम में से प्रत्येक के भीतर भगवान की उपस्थिति है, इसलिए मंदिरों में भगवान की तलाश करना अनावश्यक है। इस प्रकार अपने शरीर और

बुद्धि की उचित देखभाल करना धार्मिक सगुण की बढ़ोतरी के लिए आवश्यक है। अपने जीवनकाल के दौरान कबीर ने अपनी शिक्षाओं को मौखिक रूप से प्रसारित किया। हालाँकि, उनकी मृत्यु के बाद, उनके शिष्यों ने उनकी शिक्षाओं को लेखन का रूप दिया और आज इन ग्रंथों के आधार पर कबीर पंथ में कई समूह बन गए। कबीर के मुख्य विचार उनके ग्रंथों बीजक, रमैनी, सबद में हैं।

कबीर, वाराणसी में लहरतारा के पास रहते थे। कबीर का प्रमुख धर्मस्थान कबीरचौरा आज भी प्रसिद्ध है। यहाँ पर एक मठ और कबीरदास का मंदिर है, जिसमें उनका चित्र रखा हुआ है। देश के विभिन्न भागों से सहस्रों यात्री यहाँ पर दर्शन करने आते हैं। कबीरदास ने स्वयं ग्रंथ नहीं लिखे बल्कि उनके भजनों तथा उपदेशों को उनके शिष्यों ने लिपिबद्ध किया। इन्होंने एक ही विचार को सैकड़ों प्रकार से कहा है और सब में एक ही भाव प्रतिध्वनित होता है। ये उन्होंने राम नाम का महिमामंडन किया, एक ईश्वर (एकेश्वरवाद) में विश्वास किया और कर्मकांडों के सख्त विरोधी थे। अवतार, मूर्ति, रोजा, ईद, मस्जिद, मंदिर आदि को नहीं मानते थे। ये उपनिषदों के निर्गुण ब्रह्मा को मानते थे और साफ कहते थे कि वही शुद्ध ईश्वर है, चाहे उसे राम कहो या अल्ला।

आज छत्तीसगढ़ कबीर पंथ का एक प्रमुख केंद्र है। कबीर पंथियों द्वारा समय-समय पर मेले का आयोजन किया जाता है। इन अवसरों पर कबीर-पंथी आचार्य प्रवचन करते हैं और कबीर के उपदेशों का प्रचार करते हैं। कबीर-पंथ में बंदगी का बड़ा महत्व है। कबीर पंथी मानव शरीर को पंचतत्वों से निर्मित मानते हैं। ये पंचतत्वों से विजय प्राप्त करने के लिए पाँच बार बंदगी करना अत्यंत आवश्यक समझते हैं। कबीर-पंथ में दीक्षा की प्रथा आज भी है जिसे 'बरु' या कंठी धारणा कहते हैं। महंत साहब के शिष्यगण तुलसी के डंठल से कंठी बनाते हैं। गुरु (महंत) साहब उस कंठी को शिष्य के कंठ में बांधकर दीक्षा देते हैं। व्रतों और उत्सवों का भी कबीर-पंथ में समान महत्व है। समस्त व्रतों में पूर्णिमा के व्रत का महत्व सबसे अधिक है। इस दिन प्रत्येक कबीर पंथी सात्विक जीवन व्यतीत करने का संकल्प करते हैं। कबीर पंथियों में चौका विधान एक प्रमुख प्रक्रिया है, जिसे कबीर-पंथ के महंत संपन्न करते हैं। कबीर पंथी यह मानते हैं कि चौका विधान से मोक्ष संभव है। इसके चार प्रकार हैं- 1. आनंदी चौका, 2. जन्मीती या सहिल्सुत चौका, 3. चलावा या अष्ट प्रहरी चौका, और 4. एकोत्तरी चौका। कबीर पंथ में चौका विधान को त्रिदोष नाशक माना गया है। इन दोषों का नाश, कर्म, उपासना और ज्ञान से किया जा सकता है। (स्नातक, 1965, ब्रहाचारी, 2003, बाठ, 2007)

सभी कबीरपंथी संस्थाओं के कार्यों में शामिल है कबीर की शिक्षाओं का प्रचार-प्रसार, मेजबान देशों में भाई-चारा बढ़ाने के लिए कार्यक्रम करना, भारत से बड़े कबीरपंथी

महात्माओं को मेजबान देशों में कबीर वाणी पाठ, प्रवचन सत्संग करवाने की व्यवस्था करना, शिक्षा के लिए प्रयास करना आदि। भारत में कबीर पंथ की प्रमुख शाखाएँ:

क्र.सं.	शाखा का नाम	संस्थापक
1.	श्रुति गोपाल साहेब तथा कबीर चौरा काशी शाखा	श्रुति गोपाल साहेब
2.	श्री जागू साहेब तथा बिद्दुपुर गद्दी	जागू साहेब
3.	भगवान साहेब तथा भगताही शाखा धनौती, जिला-छपरा (बिहार)	भगवान गोसाई
4.	छत्तीसगढ़ शाखा के धर्मदास साहेब तथा वंशगद्दी, कुदुरमाल, जिला-कोरबा (छ.ग.)	मुक्तामणि नाम साहेब

स्रोत : महापात्र (2003)

भारतीय डायस्पोरा में कबीर पंथ और उनकी गतिविधियाँ: भारतीय डायस्पोरा से संबंधित कबीर पंथ मुख्यत: अनुबंध श्रमिक व्यवस्था के तहत उपनिवेशों में गए श्रमिक थे। इनकी उपस्थिति पूर्वी अफ्रीका के केन्या, तनजानियाँ, इथोपिया, यूगाण्डा, मॉरीशस, नेपाल, तिब्बत, श्रीलंका, गयाना, फ़ीजी, सुरीनाम, जमैका, त्रिनिदाड, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, यूनाइटेड किंगडम, कनाडा और अमेरिका में विशेष रूप से है। कबीर पंथियों ने विदेशों में कबीर से संबंधित अनेक संस्थाओं को स्थापित किया है। इनमें कुछ प्रमुख रूप से निम्नलिखित है: त्रिनिदाद और टोबागो में 'कबीरचौरा मठ' और 'सत्य कबीर निधी', 'कबीर पंथ एसोसिएशन' (KPA) (1932), फ़ीजी में गिरमिटिया कबीरपंथियों का 'कबीर सत परम प्रचारक महासभा' (1883), मॉरीशस में कबीर महासभा, 'द कबीरपंथी फेडरेशन', कनाडा में 'कबीर एसोसिएशन ऑफ टोरंटो' (2011) आदि।

कैरिबियन/ करीबियाई क्षेत्र में कबीर पंथियों की वास्तविक संख्या को निर्धारित करना या कबीर पंथी समुदाय के ऐतिहासिक विकास को सटीकता के साथ निर्धारित करना असंभव है, क्योंकि भारत में कबीर पंथियों की गणना अन्य हिंदू धार्मिक पंथ के अनुयायियों से अलग नहीं की जाती है। कैरिबियन में अधिकांश कबीर पंथी त्रिनिदाद, गुयाना और सूरीनाम के उन क्षेत्रों में निवास करते हैं, जहाँ औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय गिरमिटिया मजदूरों की संख्या सबसे अधिक थी। कुछ मठों (धार्मिक नेताओं) का अनुमान है कि दस हजार या उससे अधिक कबीर पंथी वर्तमान में त्रिनिदाद में रहते हैं, और उससे कुछ कम गुयाना और सूरीनाम में रहते हैं। अपेक्षाकृत छोटी संख्या के बावजूद, कैरिबियन में कबीर पंथ एक सक्रिय और जीवंत समुदाय है। कबीर पंथियों और सनातनवादियों के बीच सहयोग और अंतर्विवाह के कारण भी इनकी संख्या में कमी आई हो। संख्या में कमी का

कारण चूँकि कुछ कबीर पंथियों ने, जिन्होंने एक साथ सनातनी प्रथाओं का पालन किया था, ने अंततः कबीरी प्रथाओं को छोड़ दिया। कबीर पंथियों और मुसलमानों के बीच भी अंतर्विवाह हुआ परंतु ऐसा उदहारण कम है।

कैरिबियन में कबीर पंथियों संबंधित कुछ लिखित संदर्भ 1893 ईस्वी में प्रकाशित डी. डब्ल्यू डी. कोमिंस के नोटः 'भारत से त्रिनिदाद के लिए उत्प्रवासन *(नोट ऑन इमिग्रेशन फ्रॉम इंडिया टू त्रिनिदाद)* में मिलता है। कॉमिंस की रिपोर्ट में, कौलेसर के नाम से जाने वाले एक अप्रवासी ने बताया कि लगभग 150 कबीरी तब त्रिनिदाद में रहते थे। जिनमें 20 ब्राह्मण थे, 7 मुसलमान थे, और अन्य कोहर और चमार सहित कई निचली जातियों से थे। कबीर पंथ एसोसिएशन (केपीए) की 60वीं वर्षगाँठ के स्मरणोत्सव में त्रिनिदाद में कबीर पंथी परिवार की पाँच पीढ़ियों का पता लगा। इस परिवार के पूर्वज, गोकुल साव और गुलजरिया फूल, 1845 में भारत से गिरमिटिया मजदूरों को त्रिनिदाद लानेवाले फटेल रज्जाक नामक जहाज पर सवार होकर त्रिनिदाद पहुँचे। फिर भी ऐसा लगता है कि इन प्रारंभिक वर्षों के दौरान कबीर पंथियों के बीच बहुत कम औपचारिक संगठन होंगे। कबीर की कविता का पाठ करना और उनके सम्मान में भजन (भक्ति गीत) गाना काफी हद तक एक पारिवारिक मामले या कबीरियों के छोटे समूहों की गतिविधि बना रहा जो बगान एस्टेट में रहते होंगे।

2003 ईस्वी में त्रिनिदाद में महंतों और अन्य कबीर पंथियों के साथ कैरोलिन वी, पैगंबर के साथ-साथ जे हीरामन द्वारा 1970 ईस्वी के दशक की शुरुआत में किए गए साक्षात्कारों और पिछले बीस वर्षों में कई स्मारक पुस्तिकाओं में प्रकाशित व्यक्तिगत इतिहास से ऐसा प्रतीत होता है कि कबीर पंथियों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक औपचारिक संगठन 1880 ईस्वी के दशक में उभरा जब भारत के एक महंत मिठू दास ने ब्रिटिश गुवाना (अब गुयाना) में डेमेरारा के रास्ते त्रिनिदाद का दौरा किया। वह कई महीनों के बाद भारत लौट आया। बाद में कबीर पंथी गोबिन दास ने त्रिनिदाद का दौरा किया और जगी दास को त्रिनिदाद का पहला महंत नियुक्त किया, उन्हें और उनके अनुयायियों को / कंठी, तुलसी की लकड़ी के गोल टुकड़े को एक स्ट्रिंग पर मनके और गले में पहना जाने के प्रतीक के रूप में वितरित करने के लिए अधिकृत किया। इसके अलावा, वाराणसी से पाँच कबीरी मिशनरी 1910 ईस्वी में एस एस गंगा पर सवार होकर त्रिनिदाद पहुँचे। त्रिनिदाद में कबीर पंथियों की संख्या भारत से अनुबंध प्रणाली की अवधि के दौरान मजदूरों के आगमन, प्राकृतिक वृद्धि और मिशनरी कार्यों के संयुक्त परिणाम के रूप में बढ़ी। चार या पाँच कुटिया (पुजारियों या अनुष्ठान के नेताओं के लिए शेड जैसी संरचनाएँ) सामूहिक पूजा के लिए बगान एस्टेट में खड़ी की गई थीं। अगोधिनी बस्ती की कुटिया को छोड़कर जो अब एक स्कूल बन गया है, बाकि सभी पुरानी कबीरी कुटिया अब गायब हो गयी है।

त्रिनिदाद, ब्रिटिश गयाना और डच गयाना (अब सूरीनाम) में महंतों और अनुयायियों की संख्या में वृद्धि के साथ 1930 ईस्वी के दशक में कबीर पंथ का प्रतिनिधित्व करने वाले एक औपचारिक संगठन कबीर पंथ एसोसिएशन (KPA) की स्थापना 1932 में त्रिनिदाद में हुई थी। KPA त्रिनिदाद की औपनिवेशिक कॉलोनी में कानूनी रूप से स्थापित पहला धार्मिक संगठन था। इस संगठन के माध्यम से, 1950 ईस्वी के दशक में स्कूलों का निर्माण किया गया (एक सिपरिया में और दूसरा एगोस थिनी सेटलमेंट पर), नए महंतों को मान्यता दी गई, और अनुष्ठान अभ्यास को नियमित किया गया। केपीए के नेता और त्रिनिदाद के सबसे प्रसिद्ध महंतों में से एक, खेदार दास, फ्रीपोर्ट क्षेत्र में एक प्रसिद्ध रहस्यवादी और शिक्षक थे। 1964 ईस्वी में उनके अंतिम संस्कार में हजारों लोग शामिल हुए थे। 1990 के दशक तक, केपीए त्रिनिदाद में कबीर पंथ का एकमात्र प्रतिनिधि औपचारिक संगठन था। हालाँकि, समुदाय के भीतर सैद्धांतिक और राजनीतिक संघर्ष ने इसे दो और संगठनों में विभाजित कर दिया: कबीर चौरा मठ, वाराणसी, भारत और सत्य कबीर निधि। गुयाना या सूरीनाम में कानूनी रूप से स्थापित ऐसे कोई संगठन नहीं है।

गुयाना और सूरीनाम में औपचारिक संगठनों की अनुपस्थिति और त्रिनिदाद में हालिया गुटबाजी के बावजूद, कैरिबियन में कबीर पंथियों के बीच अनुष्ठान काफी सुसंगत है। यह इस समुदाय के अपेक्षाकृत छोटे आकार, सामान्य रूप से महंतों की कम संख्या (त्रिनिदाद में केवल दो दर्जन महंत हैं), और इन देशों में महंतों के बीच नियमित बातचीत के कारण ही संभव हुआ है। कुछ त्रिनिडाडियन महंत नियमित रूप से गुयाना और सूरीनाम विशिष्ट परिवारों या अनुष्ठान कार्यों के लिए जाते रहते हैं, साथ ही गुयाना और सूरीनाम के महंत नियमित रूप से त्रिनिदाद भी आते हैं। अधिकांश कबीर पंथी अपने घरों में अपनी अनुष्ठान गतिविधियों का संचालन करते हैं, हालाँकि कुछ परिवार अपने यार्ड के छोटे मंदिरों में करते हैं। इनमें से ज्यादातर इन रस्मों के दौरान सफेद रंग के कपड़े पहनते हैं। कैरिबियन में कबीरियों का एक-दूसरे के लिए एक समान अभिवादन है: *बंदगी साहब।* वे कबीर की कविता और शिक्षाओं के सभी तीन प्राथमिक संकलित ग्रंथों से परिचित हैं, लेकिन बीजक कैरिबियन कबीर पंथियों के लिए एक महत्वपूर्ण पाठ है क्योंकि कैरेबियन में भारतीय मजदूरों की एक बड़ी संख्या पश्चिमी बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश से थी।

कैरिबियन में कबीर पंथियों के लिए सबसे आम धार्मिक आयोजन कबीर सत्संग, झंडा, चौका और कबीर बीजक ज्ञान यज्ञ हैं। कबीर सत्संग, कबीर भजन, कबीर ग्रंथों (विशेषकर बीजक) के पढ़ने पर केंद्रित है। सत्संग एक सामूहिक प्रथा है जो कैरिबियन में अधिकांश हिंदुओं के लिए आम है। इसमें एक हवन (अग्नि समारोह), वाद्य संगत के साथ भजनों का समूह गायन, एक पंडित या महंत द्वारा पढ़ाया जाने वाला सार्वजनिक धार्मिक पाठ और प्रसाद का वितरण शामिल है और इसके साथ कबीर की शिक्षाओं से सीखे गए

सबक। कबीर सत्संग साप्ताहिक या मासिक हो सकते हैं और वे निजी घरों में आयोजित किए जाते हैं। कुछ समुदायों में जहाँ कबीर पंथियों और सनातनी हिंदुओं के बीच घनिष्ठ संबंध है, वे एक-दूसरे के सत्संग में भाग लेते हैं। हालाँकि, कबीर पंथी शायद ही कभी सनातनी मंदिरों में आयोजित सत्संग में भाग लेते हैं, क्योंकि अधिकांश कबीरी मंदिरों में पूजा नहीं करते हैं। एक अपवाद पेनल रॉक गाँव में कबीरी समुदाय का है जो मंदिर में संपन्न स्थानीय सनातनी धार्मिक गतिविधियों में नियमित रूप से भाग लेता है। और साथ वे उस सनातनी मंदिर का उपयोग कबीरी सत्संग सहित अपनी धार्मिक गतिविधियों के लिए भी करते हैं।

झंडा समारोह उन भक्तों के अनुरोध पर आयोजित किया जाता है जो गुरु (कबीर) या अपने भगवान (आमतौर पर अपने परिवार की सेवा करने वाले महंत) की स्तुति करना चाहते हैं। यह समारोह एक झंडा (झंडा/झंडी) उठाने पर केंद्रित है। कबीरी झंडा एक मोटे बाँस के खंभे से बना है (जो कि सनातनी झंडी के लिए इस्तेमाल की जाने वाली बाँस के खंभे की तुलना में बहुत लंबा होता है) सफेद सूती पट्टी से घिरा और उसपर सफेद सूती कपड़े का एक आयताकार कोणीय बैनर होता है, जिसमें महंत द्वारा हिंदी शब्द 'सोऽहं सत्य कबीर' अंकित होते हैं। इस झंडी को कबीर भक्त के घर के सामने आँगन में लगा दिया जाता है। इस प्रकार झंडे कबीरी घरों के लिए विशिष्ट मार्कर/ चिह्न के रूप में कार्य करते हैं। झंडा समारोह भी अक्सर चौका के हिस्से के रूप में संपन्न किया जाता है।

कबीर पंथी परंपरा में चौका सबसे जटिल अनुष्ठान है जो कबीरी परिवारों की ओर से महंतों द्वारा कियां जाता है। एक नया जन्म, एक जन्मदिन या शादी का सालगिरह, एक स्नातक का जश्न मनाने के लिए या किसी करीबी पूर्वज की मौत का सालगिरह करने के लिए एक परिवार द्वारा चौका प्रायोजित करता है। इस समारोह से कम से कम इक्कीस दिन पहले प्रायोजक परिवार को माँस और शराब से दूर रहना होता है। समारोह की तैयारी अक्सर सुबह शुरू होती है। शाकाहारी भोजन महिलाओं द्वारा तैयार किया जाता है जिसमें शामिल होते हैं- चावल, रोटी, आधा दर्जन या अधिक सब्जी के व्यंजन, दाल, अचार और केले के पत्ते पर परोसी जाने वाली मिठाइयाँ। घर पर बेदी (मिट्टी की वेदी) और एक ऊपरी चादनी (चंदी) पुरुषों और युवाओं द्वारा तैयार की जाती है। परिवार और जिन लोगों ने उनकी सहायता की है वे इस अनुष्ठानिक भोजन में भाग लेते हैं जो इस झंडा समारोह से ठीक पहले किया जाता है। परिवार के साथ-साथ पड़ोसियों और दोस्तों को आशीर्वाद लेने का मौका दिया जाता है। महत प्रायोजक परिवार के साथ प्राथमिक समारोह का संचालन करते हैं। महंत घर को और प्रायोजक परिवार के प्रत्येक सदस्य को आशीर्वाद देते हैं और प्रत्येक परिवार के सदस्य को गले में एक सूती धागा और कलाई के चारों ओर रक्षा के लिए सूत बांधकर आशीर्वाद देते हैं। परिवार के सदस्य समारोह के बाद धागे को हटा सकते हैं या

उन्हें पहने रख सकते हैं लेकिन उन्हें तब तक शाकाहारी रहना पड़ता है जब तक कि वे स्वाभाविक रूप से गिर न जाएँ। बाद में हवन किया जाता है जिससे परिवार के सदस्यों को आशीर्वाद प्राप्त होता है। परिवार के सदस्यों को उस वर्गाकार क्षेत्र में बैठाया जाता है जहाँ पर हवन लगाई गई है और मेहमानों को इस क्षेत्र के बाहर बैठाया जाता है। हवन के समय परिवार का प्रत्येक सदस्य फूलों की पंखुड़ियों, एक सफेद सूती बैनर, सोने का एक छोटा टुकड़ा और कुछ पूजा संबंधी अन्य वस्तुओं को समर्पित करता है। जैसे ही महंत इस वस्तुओं को यज्ञ बेदी में स्वीकार करते हैं, उन्हें फूलों की पंखुड़ियों द्वारा छिड़क कर आशीर्वाद दिया जाता है।

यज्ञ बेदी पर नारियल की बलि इस चौका धार्मिक समारोह की अंतिम क्रिया होती है। इसके तहत पहले नारियल को महंत द्वारा बेदी के किनारे पटक दिया जाता है, जिससे जोर से चटकने की आवाज आती है और फिर नारियल पानी को मेहमानों के बीच बाँटने के लिए एकत्र किया जाता है। यह नारियल का पहला बलिदान प्रार्थना और अन्य अनुष्ठानिक गतिविधियों के साथ होता है। परिवार का प्रत्येक सदस्य एक एक नारियल भेंट करता है जिसे प्रार्थना के बिना उसी तरह से तोड़ा जाता है, जिससे नारियल का पानी बेदी और उसके आसपास गिरता है। जब सभी नारियल फोड़ दिए जाते हैं, तब प्रत्येक अतिथि के बीच पवित्र नारियल का पानी प्रसाद के रूपवितरित किया जाता है और सभी को हवन के पवित्र राख का मिश्रण माथे पर लगाया जाता है। परिवार के युवा सदस्य प्रसाद वितरण में सहायता करते हैं। चौका लगभग 10:00 बजे समाप्त होता है। प्रायोजक परिवार के घर के सदस्यों को छोड़कर मेहमान एक-दूसरे के साथ मिलना-जुलना जारी रखते हैं। जो देर से आते हैं या जो फिर से खाना चाहता है, उसके लिए भोजन परोसा जाता है।

कबीर बीजक ज्ञान यज्ञ शायद ही कभी आयोजित किया जाता है। यह अनिवार्य रूप से लगातार छह रातों में आयोजित सत्संगों की एक श्रृंखला है, जिसके दौरान एक विशिष्ट अतिथि महंत कबीर की शिक्षाओं पर प्रवचन देते हैं। समारोह में चौका शामिल हो भी सकता है और नहीं भी। जनवरी 1999 में कबीर चौरा मठ, त्रिनिदाद ने एक कबीर बीजक ज्ञान यज्ञ को आयोजित किया था जिसमें कनाडा और नीदरलैंड के महंतों का त्रिनिदाद आगमन हुआ। कैरेबियन की बगान अर्थव्यवस्थाओं की कठिन परिस्थितियों और कबीर की शिक्षा जिसमें कि मंदिरों की आवश्यकता नहीं है, के बाबजूद त्रिनिदाद में कुछ कबीरी मंदिर बनाए गए हैं। दरअसल, कबीरी पहचान के लिए मंदिर का निर्माण किया गया है। भारत में कबीरी मंदिर मौजूद हैं, लेकिन वे असामान्य हैं। त्रिनिदाद में, लगभग पचास साल से भी पहले फ्रीपोर्ट क्षेत्र में एक मंदिर बनाया गया था। 1996 ईस्वी में सूरीनाम में हिंदू मंदिरों के बावजूद, वहाँ कोई कबीरी मंदिर मौजूद नहीं है। कैरोलिन वी. पैगंबर (2003)

2003 की शुरुआत में त्रिनिदाद में हिंदू मंदिरों के साथ तीन नए कबीरी मंदिर और एक आश्रम बनाया गया था। ऐसा लगता है कि त्रिनिदाद में हाल के हिंदू पुनर्जागरण ने कबीर पंथ को भी प्रभावित किया है। कुछ महंतों का मानना है कि ये नए मंदिर अनुयायियों की वर्तमान संख्या को बनाए रखने में मदद करते हैं। त्रिनिदाद के कबीरी अनुयायियों और कबीरी विद्वानों, भक्तों का मानना है कि समसामयिक दबावों और विदेश में अपनी पहचान को सुरक्षित करने के लिए कबीर की कुछ शिक्षाओं में संशोधन की आवश्यकता है।

पं. आत्माराम विश्वनाथ (1998) की पुस्तक 'हिंदू मोरिशस' के अनुसार मॉरीशस में कबीर से संबंधित कई मंदिर, पंथ और मठ आदि थे। सेवादास द्वारा कबीर बाड़ी, वाकुआ (1922), पिची वेरजे-संपियेर में लोकंदास का बनाया कबीर आश्रम (1921), कबीर धर्म महासभा, कबीर धर्म महासभा, श्री. जीयन सोना, रघुनाथ हुकुम सिंह, स्व. पं. रामावतार महाराज तथा महंत ज्ञानदास के उद्योग से इसका जन्म हुआ है। हंस कबीर मठ देवल, पायोत-कालबोर्न में भी एक कबीर मठ है, जिसकी व्यवस्था उपरोक्त संस्था द्वारा होती है। इसकी रजिस्ट्री 1921 ईस्वी में हुई है। यहाँ के महंत गरीबदास थे। वर्तमान समय में मॉरीशस के कबीर पंथियों के 'कबीरपंथी फेडरेशन' कार्य कर रही है। यह फेडेरेशन मॉरीशस के कबीरपंथी लोगों के लिए चौका, आरती, संध्या आरती, सत्संग, झंडी, कबीर ज्ञान यज्ञ जैसे कार्यक्रम का आयोजन करती है। साथ ही कबीर की शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए त्रैमासिक जर्नल 'सत्य गुरु कबीर' का प्रकाशन करती है।

टोरंटो इंक के 'कबीर एसोसिएशन' की स्थापना मार्च 2011 ईस्वी में कनाडा के ओंटारियो में एक चैरिटी गैर-लाभकारी संगठन के रूप में हुई। पिछले कुछ वर्षों में, टोरोंटोनियन समुदाय के कबीर पंथ भक्तों और आध्यात्मिक साधकों के लिए कबीर साहेब की शिक्षाओं में रुचि बढ़ी है। भारत, पाकिस्तान, मॉरीशस, गुयाना, जाम्बिया और त्रिनिदाद और टोबैगो से कबीर साहेब के कई अनुयायी टोरंटो और ग्रेटर टोरंटो क्षेत्र में बसे हैं। एसोसिएशन नियमित रूप से कबीर दास की शिक्षा से संबंधित विभिन्न गतिविधियों का आयोजन, घरों में भजन और सत्संग आदि कराता है। एसोसिएशन कबीरदास की शिक्षाओं के प्रचार-प्रसार के लिए 'दिव्य दृष्टी' नामक जर्नल निकालता है। गयाना में जन्में डॉ. जगेस्सर दास 'कबीर एसोसिएशन' के पितामह कहे जाते हैं। जगेस्सर दास गुरु कबीर एसोसिएशन के अध्यक्ष भी रहे हैं। पेशे से चिकित्सक रहने के बावजूद इन्होंने कबीरदास की शिक्षा और दर्शन के प्रचार-प्रसार के लिए कई पुस्तकों का लेखन किया, जिनमें कुछ प्रमुख हैं: *Religious Horizons, Religious Horizons, Sakhis of Guru Kabir, Pictorial Glimpses into the Life of Satguru Kabir Saheb, Bijak of Kabir.*

तोताराम सनाढ्य की 'फ़ीजी द्वीप में मेरे इक्कीस वर्ष' (1972) और ब्रिज. वी. लाल की पुस्तक 'चलो जहाजी' (2012) के अध्ययन से फिजी में हिंदू धर्म एवं कुछ

लोकप्रिय धार्मिक पंथों जैसे- कबीर पंथ, नाथ पंथ, नानक, सतनामी, दादू पथ, जगजीवनदास, रामानंदी और आर्य समाज की जानकारी मिलती है। यहाँ हमारा प्रयोजन कबीर पंथ से है। दिसंबर 1894 में, बाबा ओरिदास ने फ़ीजी के मणिपातु में कबीर पंथ अखाड़े की स्थापना की। उन्होंने इस संप्रदाय में लगभग 200 समर्पित शिष्यों को दीक्षा दी। ओरिदास, पुलिस विभाग का कर्मचारी था। धीरे-धीरे उनके भक्तों की संख्या बढ़कर एक हजार हो गई। इस स्थान पर हर पखवाड़े भजन और प्रार्थना सभाएँ होती थीं। अंत में, वह अपने सबसे प्रिय शिष्य बाबा दल भजन दास को अपना संप्रदाय सौंप कर भारत लौट गए। दल भंजन दास ने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया, लेकिन उनके पास ओरिदास के जैसी समझ और प्रभाव की कमी थी। मार्च 1898 में, बाबा भाग्गादास फ़ीजी पहुँचे और रेवा के दावुइलेवु में बस गए। ओरिदास के अधिकांश पूर्व शिष्य और कुछ अन्य उसके साथ जुड़ गए। दावुइलेवु में हर कोई उनका शिष्य बन गया। इस तरह उनका अखाड़ा काफी लोकप्रिय हुआ। उनके शिष्यों ने 400 रुपये एकत्र किए और उनके लिए एक कुटी बनाई। हर पूर्णमासी को फ़ीजी भारतीय लोग वहाँ दावत और उत्सव के लिए इकट्ठा होते थे। पिंगलदास और सीतावदास, भाग्गादास के प्रिय शिष्य थे। सीतावदास ने शिष्यों को पढ़ाया, समझाया जबकि पिंगलदास ने अपने गुरु की देखभाल की। सीतावदास के बाद, पिंगलदास ने उनका स्थान लिया। बाबा भाग्गादास संप्रदाय बहुत लोकप्रिय हुआ। बाबा का आशीर्वाद लेने के लिए लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। हर शाम, कुटी में भजन गाया जाता था, साथ में झांझ, ड्रम और ऐसे अन्य उपकरण बजाए जाते। विशेष रूप से पूर्णमासी पर भारी भीड़ उमड़ती। भांग के साथ मिश्रित तंबाकू का बड़ा भंडार भी रखा गया था। पिंगलदास ने बाद में सुवा में अपनी कुटी का निर्माण किया। (सनाढ्य, तोताराम, 1972, लाल, ब्रिज.वी, 2012, पृष्ठ. 247-248)

वर्तमान समय में कबीर पंथी भी मंदिर निर्माण कर रहें हैं क्योंकि इनका मानना है कि ये नए मंदिर अनुयायियों की संख्या को बनाए रखने में मदद करते हैं। कबीर पंथ में समय के दबाब और जरूरत के अनुसार कई शाखाएँ निर्मित हो गयी है। कबीर की मूल शिक्षा और स्थानीयता के आधार पर चलने वाले कबीर पंथी अपने को धरमदास की परंपरा को मानते हैं जबकि सुधारवादी कबीर पंथी समसामयिक माँगों और वैश्विक पहचान के लिए कबीर की कुछ शिक्षाओं में संशोधन की आवश्यकता पर बल देते हैं। इस सुधारवादी कबीर पंथ के नेतृत्व कर्ता कबीरचौरा, लहरतारा, बनारस शाखा के महत विवेकान्द हैं। इन्होंने चौका अनुष्ठान को समाप्त करने की बात कही है क्योंकि यह कबीर की मूल शिक्षा पर आधारित नहीं है। कबीर पंथ में समय की समयानुसार सुधार करने की आवश्यकता है ताकि कबीर दास के अनुयायी देश-विदेश में अपनी पहचान को बनाये रखते हुए समाज के मार्गदर्शक बन सकें।

संदर्भ:

1. स्नातक, विजयेन्द्र, (1965), कबीर नई दिल्ली राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
2. ब्रह्मचारी, रामाश्रय दास. (2003), संत कबीर और उनका दर्शन नयी दिल्ली: प्रकाशन संस्थान,
3. बाठ, सुखविंदर कौर (2007), कबीर का लोकतात्विक चिंतन नयी दिल्ली वाणी प्रकाशन,
4. *Clifford. James (1992) Traveling Cultures. In Cultural Studies. Lawrence Grasberg, Cary Nelson, and Paula Trencher, eds. Pp. 96-116. New York: Rutledge.*
5. *Bhatia Tej. K. (2001)) Media, Identity and Diasprora: Indians Abroad Diaspora, Identity and Language Communities Studies in the Linguistic Sciences 31:1. Spring.*
6. *Vertovec, Steven. (1992). Hindu Trinidad. London: Macmillan Caribbean*
7. *.....(2000). The Hindu Diaspora. Comparative Patterns. London: Routledge.*
8. *Ramsurrun, Prahlad. (2013) Hindu Mauritius. New Delhi: Star Publication Pvt. Ltd.*
9. *Cohen, Robin. (2008). Global Diasporas: An introduction. p-117. New York: Rutledge.*
10. लाल, ब्रिज.वी. (2012), चलोजजाजी, कैनबरा: ऑस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी,
11. Carolyn, V. Prorok. (2012). in Case, F.I., & Taylor, P. The Encyclopedia of Caribbean Religions: Volume 1: A - L; Volume 2: M- Z. Champaign: University of Illinois Press.
12. Mahapatra, S. (2003). Chhattisgarh ke adivasiyon ke Beej Samanya Jan Ka Masiya Kabir Retrieved on October 10, 2010 from http:// tdil.mit.gov.in/coilne t/ignca/kabir026.htm

13. Vivekdas (2003). Ghat ka Chauka. Varanasi: Kabirvani Prakasan Kendra.

14. Risley, H.H. & Gait, E.A. (1903). Report on the census of India 1901. Calcutta: Superintendentof Government Printing.

15. Singh, Gurharpal. (2003). "Introduction." In Bhikhu Parekh, Gurharpal Singh and Steven Vertovec (eds), Culture and Economy in the India Diaspora. Routledge: London.

16. Comins, D. W. D. (1893). Note on Emigration from India to Trinidad. Calcutta: Bengal Secretariat Press.

17. Heeraman, Joyce D. (1972). "The Kabir Panth in Trinidad." Caribbean Studies Project No01149. Saint Augustine, Trinidad and Tobago:University of the West Indies.

18. Kabir Panth Association. (1993). 60th Anniversary Commemoration. Trinidad and Tobago: Kabir Panth Association.

❑❑

View publication stats